

## चौबीस तीर्थकरों के अर्घ्य

१. श्री ऋषभनाथ भगवान का अर्घ्य

(ताटक)

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय ।  
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ॥  
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन-वच-काय ।  
हे करुणानिधि! भव-दुख मेटो, यातैं मैं पूजूँ प्रभु पाय ॥  
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२. श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जल-फल सब सज्जै, बाजत बज्जै, गुनगन रज्जै मन मज्जै ।  
तुम पद जुगमज्जै, सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निजकज्जै ॥  
श्री अजित जिनेशं, नुतनकेशं, चक्रधरेशं खगेशं ।  
मनवांछित दाता, त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जगेशं ॥  
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

३. श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

(चौबोला)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य किया ।  
तुमको अरपों भावभगति धर, जै जै जै शिवरमनि पिया ॥  
संभवजिन के चरन चरचतैं, सब आकुलता मिट जावै ।  
निज निधि ज्ञान-दरश-सुख-वीरज, निराबाध भविजन पावै ॥  
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

४. श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीतिका)

अष्ट द्रव्य सँवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।  
नचत रचत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही ॥  
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है ।  
पदवंद वृन्द जजे प्रभु भवदन्द-फन्द निकन्द है ॥  
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

५. श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

(कवित्त)

जल चंदन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।  
नाचि राचि शिरनाथ समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ॥  
हरिहर वंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।  
तुम पदपद्म सद्यशिवदायक, जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥  
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

६. श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय ।  
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥  
मन-वच-तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय ।  
पूजों भावसों, श्री पदमनाथ पद सार, पूजों भावसों ॥  
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

७. श्री सुपाश्वर्नाथ भगवान का अर्घ्य

(चौपाई आँचलीबद्ध)

आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।  
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥  
तुम पद पूजों मन-वच-काय, देव सुपारस शिवपुराय ।  
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥  
ॐ ह्रीं श्री सुपाश्वर्नाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

८. श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

(अवतार)

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।  
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥  
श्री चंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै,  
मन-वच-तन जजत अमंद, आतमजोति जगै ॥  
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

९. श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन-वच-तन हलसाय ।  
तुम पद पूजौं प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥  
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय ॥  
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१०. श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

(वसंततिलका)

कं श्रीफलादि<sup>१</sup> वसु प्रासुक द्रव्य साजै ।  
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजै ॥  
रागादि दोष मलमर्दन हेतु येवा ।  
चर्चो पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥  
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

११. श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीता)

जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली ।  
करि अर्घ्य चर्चों चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली ॥  
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं ।  
दुख दन्द-फन्द निकन्द पूनचन्द जोति अमन्द हैं ॥  
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१२. श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

जल-फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।  
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ॥  
वासुपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई ।  
बालब्रह्मचारी लिखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥  
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

1. जल

१३. श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

(सोरठा)

आठों दरब सँवार, मन-सुखदायक पावने ।

जजों अर्घ्य भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१४. श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीता)

शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।

अरु धूप फल जुत अरघ करि, कर जोर जुग विनती करों ॥

जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनों ।

शिवकंतवंत महंत ध्यावो, भ्रन्तवन्त नशावनों ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१५. श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।

बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥

परम धरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।

पूजूँ पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौँ दै दै तारी ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१६. श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी ।

तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी शरनारी ।

श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।

हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१७. श्री कुन्थुनाथ भगवान का अर्घ्य

(चाल लावनी)

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।

फलजुत जजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी ॥

कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दास केरी।  
भवसिन्धु पस्थो हों नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी॥  
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१८. श्री अरनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं पुष्प चरूं।  
वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं अर्घ्य करूं॥  
प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम्।  
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अनगुनमालं वरभालम्॥  
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१९. श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजौं भगति बढ़ाई।  
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई॥  
राग-दोष मद मोह हरन को, तुम ही हौ वरवीरा।  
यातैं शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा॥  
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

(गीतिका)

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों।  
पूजों चरन-रज भगत जुत, जातैं जगत सागर तरों॥  
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनि गुनमाल है।  
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है॥  
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२१. श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भय भौ हरं।  
जजतु हौं नमि के गुन गायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥  
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२२. श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल-फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।  
अष्टमथिति के राजकरन कों, जजों अंग वसु नाय ॥  
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥  
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२३. श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिए ।  
दीप-धूप-श्रीफलादि अर्घ्य तैं जजीजिये ॥  
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा ।  
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा ॥  
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
२४. श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

(अवतार)

(१) जल-फल वसु सजि हिमथार, तन-मन मोद धरों ।  
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरो ॥  
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।  
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥  
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
(हरिगीत )

(२) इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अन्-अर्घ्य पद के सामने ।  
उस परम पद को पा लिया, हे पतित-पावन! आपने ॥  
सन्तप्त मानस शान्त हों, जिनके गुणों के गान में ।  
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में ॥  
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

\*\*\*\*\*